अध्याय 8

विपत्तियाँ: मेंढक, कुटकियाँ और डांस

अध्याय 8 में दूसरी विपत्ति (मेंढक), तीसरी विपत्ति (कुटकियाँ), और चौथी विपत्ति (डांस) दर्ज हैं। दूसरी विपत्ति के सम्बन्ध में, मूसा और हारून फ़िरौन के सामने इस्राएल की मुक्ति की माँग रखने और यदि वह उनकी विनती स्वीकार न करे तो जो विपत्ति आएगी उसकी घोषणा करने के लिए उपस्थित हुए (8:1, 2)। मूसा और हारून ने परमेश्वर की शक्ति के द्वारा मेंढकों को उत्पन्न किया; तो भी, मिस्र के जादूगरों ने इस करतब की नकल कर ली (8:3-7)। फ़िरौन पछताया और मूसा और हारून को बुलवाया। उसने कहा यदि वे विपत्ति को हटा दें तो वह लोगों को जाने देगा। इसके परिणाम स्वरूप विपत्ति हटा दी गई (8:8-14), परन्तु फ़िरौन ने अपना हृदय कठोर किया और लोगों को जाने से मना कर दिया (8:15)।

परमेश्वर के वचन के अनुसार, मूसा और हारून ने इसके बाद कुटकियों के झुण्ड उत्पन्न कर दिए जो सारे देश में फ़ैल गए। जादूगर इस बात से आश्वस्त हो गए कि यह "परमेश्वर की अंगुली" का ही कार्य था। हालाँकि, फ़िरौन इस्राएल के मिस्र से चले जाने के प्रति कठोर और अनिच्छुक बना रहा (8:16-19)।

अगली विपत्ति से पहले, मूसा ने फ़िरौन का सामना किया और उसे चिताया कि यदि वह इस्राएलियों को जाने नहीं देगा तो डांसों के झुण्ड मिस्र को कष्ट देंगे। उसने यह भी कहा कि परमेश्वर मिस्र और इस्राएल में अंतर करेगा: गोशेन, वह क्षेत्र जहाँ इस्राएली रहते थे, विपत्ति का अनुभव नहीं करेगा। परमेश्वर ने ठीक उसी प्रकार विपत्ति को भेजा, जिस प्रकार मूसा ने कहा था (8:20-24)। फ़िरौन ने मूसा के साथ मोल-भाव करने का प्रयास करते हुए प्रतिक्रिया दी, पहले उसने सलाह दी कि इस्राएल उस देश के अंदर ही आराधना करे। इसके बाद उसने इस्राएल को अपना पर्व मनाने के लिए थोड़ी दूरी तक जाने की अनुमति दी (8:25-29)। जब डांसों के झुण्ड चले गए, तो फ़िरौन ने अपने हृदय को फिर से कठोर किया और लोगों को जाने से मना कर दिया (8:30-32)।

मेंढक (8:1-15)

मेंढकों का मिस्र को ढाँप लेना (8:1-7)

[1]तब यहोवा ने फिर मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास जाकर कह, 'यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है: मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे जिससे वे मेरी उपासना करें। [2]परन्तु यदि उन्हें जाने न देगा तो सुन, मैं मेंढक भेजकर तेरे सारे देश को हानि पहुँचाने वाला हूँ। [3]और नील नदी मेंढकों से भर जाएगी, और वे तेरे भवन में, और तेरे बिछौने पर, और तेरे कर्मचारियों के घरों में, और तेरी प्रजा पर वरन् तेरे तन्दूरों और कठौतियों में भी चढ़ जाएँगे; [4]और तुझ पर, और तेरी प्रजा और तेरे कर्मचारियों, सभों पर मेंढक चढ़ जाएँगे'।" [5]फिर यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी, "हारून से कह दे कि नदियों, नहरों, और झीलों के ऊपर लाठी के साथ अपना हाथ बढ़ाकर मेंढकों को मिस्र देश पर चढ़ा ले आए।" [6]तब हारून ने मिस्र के जलाशयों के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया; और मेंढकों ने मिस्र देश पर चढ़कर उसे छा लिया। [7]और जादूगर भी अपने तंत्र-मंत्रों से उसी प्रकार मिस्र देश पर मेंढक चढ़ा ले आए।

आयतें 1, 2. दूसरी विपत्ति का ब्यौरा उसका वर्णन करता है जो मूसा को **फ़िरौन** से कहना था, परन्तु मूसा की मिस्री राजा के साथ वास्तविक भेंट दर्ज नहीं करता। **यहोवा ने** कहा कि दूसरी विपत्ति एक अनुरोध के साथ प्रारम्भ होगी - **"मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे"** - और इसमें एक चेतावनी भी होगी - **"परन्तु यदि तू उन्हें जाने न देगा तो सुन, मैं मेंढक भेजकर तेरे सारे देश को हानि पहुँचाने वाला हूँ।"** क्रिया "हानि पहुँचाना [प्रहार करना]" (נָגַף *नागाप)* कई बार एक ऐसे प्रहार का सन्दर्भ देता है जिसके कारण गम्भीर चोट अथवा मृत्यु तक हो सकती है। यह युद्ध में एक सेना की पूर्णतया पराजय के लिए भी उपयोग किया जाता था। प्राचीन मिस्र में, "मेंढक" हेकेट (या हेकेत) देवी के एक चिह्न के रूप में इस्तेमाल किए जाते थे, जिसके विषय में यह माना जाता था कि वह स्त्रियों की प्रसव के समय सहायता करती थी। स्त्रियाँ जन्म देते समय अपनी सुरक्षा के लिए उसकी छवि वाले ताबीज़ पहना करती थीं। मेंढक एक सहायता के चिह्न की बजाए, मिस्री समाज के लिए एक उजाड़ने वाली वस्तु बन जाएँगे।

आयतें 3, 4. विपत्ति के प्रभाव का सजीव ढंग से वर्णन किया गया है। **मेंढक** फ़िरौन के **भवन** में, और उसके **बिछौने** पर, और (उसके) दासों के घरों में ("कर्मचारियों"; NIV), और उसकी समस्त **प्रजा**, मिस्रियों में फ़ैल जाएँगे। वे सारे देश के **तन्दूरों** और **कठौतियों** को भी दूषित कर देंगे। इस प्रकार के व्यक्तिगत स्थानों का वर्णन करने के द्वारा, लेखक ने इस बात पर बल दिया कि उनकी घृणित उपस्थिति से कोई भी नहीं बचेगा।

प्राचीन "तन्दूर" आम तौर पर रोटियां सेंकने के लिए उपयोग किए जाते थे। वे मिट्टी से बनाए जाते थे और उन्हें या तो एक बेलन या एक अंडे के आकार में बनाया जाता था। तन्दूरों को भूमि के अंदर अथवा उसके ऊपर, और या तो घर के

भीतर या बाहर रखा जा सकता था।[1] "कठौतियाँ" या "गूंथने के बर्तन" (NIV) रोटी बनाने के लिए पानी और आटे को मिश्रित करने हेतु उपयोग किए जाते थे। भोजन बनाने के ये बर्तन आकार में बड़े हो सकते थे, इस तथ्य का चित्रण एक प्राचीन फिनिशियन स्त्री (नौ से छह शताब्दी इस्वी पूर्व) की एक आटा गूंथती हुई मिट्टी की मूर्ति है।[2] हालाँकि इस्राएलियों के द्वारा उपयोग किया जाने वाला बर्तन "अवश्य ही एक छोटा, हल्का लकड़ी का एक डिब्बा रहा होगा, ताकि इसे कपड़े में बांधा जा सके और कंधे पर उठाकर ले जाया जा सके (निर्गमन 12:34)।"[3]

आयतें 5-7. चूँकि मूसा की माँगो के प्रति फ़िरौन की किसी प्रतिक्रिया के विषय में नहीं कहा गया है, तो पाठक यह मान लेना चाहिए कि राजा ने एक बार फिर से इस्राएल की विनती अस्वीकार कर दी। जो बात निश्चित है वह यह है कि यहोवा ने हारून से (अपना) **हाथ बढ़ाने** के लिए कहा (देखें 7:19), और इसका परिणाम था कि **मेंढकों ने मिस्र देश पर चढ़कर उसे छा लिया**। हालाँकि **जादूगर**, संभवतः अपनी जादूगरी की चाल के माध्यम से उस आश्चर्यकर्म की नकल करने में सक्षम थे, जो परमेश्वर ने हारून के माध्यम से किया था।

मेंढकों का मर जाना (8:8-15)

[8]तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, "यहोवा से विनती करो कि वह मेंढकों को मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करे; और मैं इस्राएली लोगों को जाने दूँगा। जिससे वे यहोवा के लिये बलिदान करें।" [9]तब मूसा ने फ़िरौन से कहा, "इतनी बात के लिए तू मुझे आदेश दे कि अब मैं तेरे और तेरे कर्मचारियों, और प्रजा के निमित्त कब विनती करूँ, कि यहोवा तेरे पास से और तेरे घरों में से मेंढकों को दूर करे, और वे केवल नील नदी में पाए जाएँ?" [10]उसने कहा, "कल" उसने कहा, "तेरे वचन के अनुसार होगा, जिससे तुझे यह ज्ञात हो जाए कि हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कोई दूसरा नहीं है। [11]और मेंढक तेरे पास से और तेरे घरों में से और तेरे कर्मचारियों और प्रजा के पास से दूर होकर केवल नदी में रहेंगे।" [12]तब मूसा और हारून फ़िरौन के पास से निकल गए; और मूसा ने उन मेंढकों के विषय, यहोवा की दोहाई दी जो उसने फ़िरौन पर भेजे थे। [13]और यहोवा ने मूसा के कहने के अनुसार किया; और मेंढक घरों, आँगनों, और खेतों में मर गए। [14]और लोगों ने इकट्ठा करके उनके ढेर लगा दिए, और सारा देश दुर्गन्ध से भर गया। [15]परन्तु जब फ़िरौन ने देखा कि अब आराम मिला है तब यहोवा के कहने के अनुसार उसने फिर अपने मन को कठोर किया, और उनकी न सुनी।

आयत 8. यदि जादूगरों को यह आशा होती कि वे फ़िरौन को यह विश्वास दिला सकते हैं कि वे मूसा और हारून के समान आश्चर्यकर्म करने में सक्षम थे, तो उन्हें और अधिक मेंढक उत्पन्न करने का ढोंग करने की बजाए मेंढकों को हटाने की अपनी योग्यता का प्रदर्शन करना चाहिए था। उनकी गुप्त कलाओं और चालों के बावजूद, फ़िरौन ने देखा, कि विपत्ति के अंत के लिए वह अपने जादूगरों पर निर्भर नहीं रह सकता था। इसी कारण, उसने **मूसा और हारून** को उसके सामने आने के

लिए आमंत्रित किया और मूसा से कहा कि वह **यहोवा से मेंढकों** [को] **हटाने की विनती करे**। वह सहमत हो गया कि वह **लोगों को जाने** देगा, **जिससे वे जाकर यहोवा के लिए बलिदान करें**। चूँकि उसने पूछा था कि यहोवा कौन है ... ? तो फ़िरौन का व्यवहार पहले ही बदल चुका था, परन्तु वह अभी आत्म-समर्पण के उस बिंदु तक नहीं पहुंचा था जिस पर वह कहानी में आगे पहुंचेगा (12:32)।

आयतें 9, 10. मूसा ने फ़िरौन को यह चुनने का अवसर दिया कि विपत्ति कब समाप्त होगी। जब फ़िरौन ने समय (**"कल"**) दिया और विपत्ति उसी समय हट गई, तो इस बात में कोई संदेह नहीं हो सकता था कि विपत्ति इस्राएल के परमेश्वर **यहोवा** के द्वारा ही भेजी गई थी और उसी ने उसको दूर किया था। इसके बाद राजा को परमेश्वर की अनोखी शक्ति पर विश्वास हो जाएगा, और उसे एहसास हो जाएगा कि **उसके समान कोई नहीं है**।

आयत 11. मूसा ने फ़िरौन को आश्वासन दिया कि **मेंढक** उसके, उसके कर्मचारियों, और मिस्र के लोगों पर से हटा लिए जाएँगे; **वे केवल नील नदी में रहेंगे**। यह नदी इन प्राणियों के लिए एक प्राकृतिक आवास थी। नील की वार्षिक बाढ़ के बाद मेंढकों के और बढ़ जाने की आशा होती थी; घटता पानी उनके लिए तालाबों को छोड़ जाता था जो उनके लिए प्रजनन की भूमि का कार्य करते थे।

आयतें 12-14. मूसा और हारून के फ़िरौन के पास से चले जाने के बाद, मूसा ने **यहोवा** से मेंढकों को हटाने की प्रार्थना की। **यहोवा** ने मूसा की दुहाई सुनी और **मूसा के कहने के अनुसार किया**,[4] यह इस बात का चित्रण था, जो याकूब ने कहा था कि, "धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है" (याकूब 5:16)।

हालाँकि, विपत्ति का हटाया जाना स्वयं विपत्ति के समान ही अप्रिय था। वाल्टर सी. कैसर, जूनियर ने कहा, "यह, 'आराम' [רְוָחָה, *रे वाकाह;* 8:15] इस घमंडी राजा के लिए विपत्ति से भी बुरा था।"[5] आक्रमणकारी मेंढक एक दम से नदी में वापस नहीं कूद पड़े। बल्कि, वे जहाँ पर थे वहीं - **घरों, आँगनों, और खेतों में मर गए**। सफाई करने के प्रयास में मिस्रियों ने **उन्हें इकट्ठा करके उनके ढेर लगा दिए**। विपत्ति का परिणाम अवश्य ही इसका सबसे बुरा पहलू रहा होगा: **सारा देश दुर्गन्ध से भर गया।** देश सड़ रहे मेंढकों की दुर्गन्ध से भर गया था।[6] यही भाषा 7:21 में उपयोग की गयी थी जहाँ पर मछलियाँ मर गईं, और नील नदी दुर्गन्ध से भर गई थी। मिस्रियों को चाहे इस बात का एहसास हुआ हो या नहीं, दुर्गन्ध फ़िरौन के द्वारा परमेश्वर के निर्देशों को सुनने से इनकार करने का परिणाम था।

आयत 15. फिर भी, जब **फ़िरौन ने देखा कि आराम मिला है, उसने अपने मन को कठोर किया** (וַיַּכְבֵּד אֶת־לִבּוֹ, *वे हक्बेद' एथ लिब्बो*)। इस कथन में फ़िरौन के हृदय को कठोर करने के विषय में, अर्थों की कई छायाओं सहित, तीन अलग-अलग इब्रानी क्रियाओं को उपयोग किया गया है। 15वीं आयत में यहाँ एक बार-बार आने वाला शब्द, כָּבֵד *(काबेद)* है, जिसका अर्थ है "भारी हो जाना।" एक और क्रिया जो आमतौर पर आती है वह חָזַק है, जिसका अर्थ "दृढ़ हो जाना" है। 7:23 में और 13:15 में शब्द वास्तव में קָשָׁה *(काशाह)* है, जिसका अर्थ "कठोर बनाना" है।

फ़िरौन की दुष्टता एक बार फिर प्रकट है। उसने मूसा और हारून को

आश्चर्यकर्म करते हुए देखा था, उसने मिस्र को दो विपत्तियों के कारण परेशान होते देखा था, और उसने अपने लोगों को उन विपत्तियों के कारण कष्ट भोगते भी देखा था। फिर भी, जब आराम मिला, तो वह मूसा से की हुई अपनी प्रतिज्ञा भूल गया और परमेश्वर के लोगों को जाने की अनुमति नहीं दी। जिस प्रकार परमेश्वर ने कहा था, फ़िरौन द्वारा सुन पाने की **चूक** ठीक उसी प्रकार हुई, और ये परिस्थितियाँ अब भी कार्य करेंगी ताकि परमेश्वर की महिमा हो।

कुटकियाँ (8:16-19)

16फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून को आज्ञा दे, 'तू अपनी लाठी बढ़ाकर भूमि की धूल पर मार, जिससे वह मिस्र देश भर में कुटकियाँ बन जाएँ'।" 17और उन्होंने वैसा ही किया; अर्थात् हारून ने लाठी को ले हाथ बढ़ाकर भूमि की धूल पर मारा, तब मनुष्य और पशु दोनों पर कुटकियाँ हो गईं, वरन् सारे मिस्र देश में भूमि की धूल कुटकियाँ बन गईं। 18तब जादूगरों ने चाहा कि अपने तंत्र-मंत्रों के बल से हम भी कुटकियाँ ले आएँ, परन्तु यह उनसे न हो सका। इस प्रकार मनुष्यों और पशुओं दोनों पर कुटकियाँ बनी ही रहीं। 19तब जादूगरों ने फ़िरौन से कहा, "यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है।" तौभी यहोवा के कहने के अनुसार फ़िरौन का मन कठोर होता गया, और उसने मूसा और हारून की बात न मानी।

आयतें 16, 17. फ़िरौन के हृदय कठोर करने के कारण, परमेश्वर ने यह तीसरी विपत्ति भेजी, **कुटकियाँ** की विपत्ति, जिसने **मनुष्य और पशु** दोनों को प्रभावित किया। NASB में जो इब्रानी शब्द "कुटकियों" में अनुवाद किया गया है वह כִּנִּם *(केन)* से है। चूँकि यह शब्द पुराने नियम में विरले ही प्रकट होता है इसी कारण इस शब्द से वास्तव में किस कीट को दर्शाया गया है उसका निर्धारण करना कठिन है।[7] NASB के साथ ही कई अन्य संस्करणों (NRSV; NIV; ESV; NAB) में भी "कुटकियों" का उपयोग किया गया है, अन्य (KJV; NKJV) *केन* का "जूओं," "कीड़ों" (REB), और "मच्छरों" (NJB) में अनुवाद करते हैं।

यहूदी दार्शनिक फिलो ने इस विपत्ति की "कुटकियों" का वर्णन नथुनों और कानों में घुसने, और इसी के साथ उड़ते हुए आँखों में घुसने और पुतलियों को घायल करने के रूप में किया है।[8] आर. ऐलन कोल ने कहा कि *केन* ने सम्भवतः मच्छरों का सन्दर्भ दिया है। "मच्छर अविश्वसनीय संख्या में प्रजनन करेंगे; और जब उन्हें तंग किया जाएगा तो वे एक काले बादल के आकार में उठेंगे और वायु उनके तीखे गुंजन से भर जाएगी।"[9] विपत्ति में चाहे जो भी सम्मिलित रहा हो, कीट-पतंगे असंख्य थे और **सारे मिस्र देश में** फ़ैल गए थे। "समस्त" का आवश्यक रूप से अर्थ यह नहीं कि इन कीटों ने मिस्री क्षेत्र को प्रत्येक वर्ग फुट को प्रभावित किया था।; बल्कि, शब्द संकेत करता है कि कुटकियाँ (या मच्छर) सारे देश में हर स्थान पर फ़ैल गए थे।

आयतें 18, 19. इस क्षण तक, **जादूगर**, मूसा के आश्चर्यकर्मों की बराबरी करते

हुए प्रकट हुए थे। हालाँकि, वे **कुटकियों** के झुण्ड को उत्पन्न करने की नकल नहीं कर सके। इसी कारण उन्होंने निष्कर्ष दिया कि मूसा एक जादूगर से अधिक था और जो वह कर रहा था वह एक जादू के करतब से अधिक था। मूसा के आश्चर्यकर्म वास्तविक थे।

सन्दर्भ विपत्ति के बाद फ़िरौन के द्वारा बुलाई गई एक सभा का संकेत देता है, जिसमें उसने अपने सम्मति देने वालों से पुछा कि क्या उसे मूसा की माँगो के आगे हार मान लेनी चाहिए अथवा नहीं। जादूगरों को भी इस सभा में आमंत्रित किया गया था, और उन्होंने **फ़िरौन** को यह कहकर सलाह दी, **"यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है।"** दूसरे शब्दों में उन्होंने कहा कि, "यह एक वास्तविक है, यह केवल एक चाल नहीं है।" आशय यह था कि फ़िरौन को मूसा और हारून की सुननी ही होगी, क्योंकि वे वास्तव में उस परमेश्वर की ओर से आए थे जो आश्चर्यकर्म करता है।

"परमेश्वर की अंगुली" का भाव उसके सामर्थी "हाथ" और "भुजा" से सम्बन्धित भावों के समान ही है (3:19 पर टिप्पणियाँ देखें)। हालाँकि परमेश्वर एक आत्मिक प्राणी है, फिर भी उसका वर्णन मानव शब्दावलियों में किया गया है ताकि लोग उसे अच्छे तरीके से समझ सकें। परमेश्वर की अंगुली(यों) की शक्ति सृष्टि (भजन 8:3), पत्थर की तख्तियों पर दस आज्ञाएँ लिखने (निर्गमन 31:18; व्यव. 9:10), और यीशु के दुष्टात्माओं को बाहर निकलने पर लागू होती है (लूका 11:20 देखें)।

फ़िरौन ने जादूगरों की सलाह सुनने से इनकार कर दिया और अपने **मन** को फिर से **कठोर** कर लिया, जिसका परिणाम यह था कि इस्राएल को उनके दासत्व के देश से बाहर जाने से मना कर दिया गया। तीसरी विपत्ति के हटाए जाने के विषय में कुछ नहीं कहा गया। कुटकियाँ, या मच्छर, एक अस्थायी समस्या थे जो सम्भवतः अपने आप ही हल हो गई थी। जिस प्रकार परमेश्वर ने थोड़े समय के लिए नील नदी को लहू में बदल दिया था, उसी प्रकार उसने मिस्र पर कुटकियों की विपत्तियों अस्थायी रूप से भेजा था।

डांसों के झुण्ड (8:20-32)

डांसों के झुंडों का मिस्र में आना (8:20-24)

[20]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "सबेरे उठकर फ़िरौन के सामने खड़ा होना, वह तो जल की ओर आएगा, और उससे कहना, 'यहोवा तुझ से यह कहता है: मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे मेरी उपासना करें। [21]यदि तू मेरी प्रजा को न जाने देगा तो सुन, मैं तुझ पर और तेरे कर्मचारियों और तेरी प्रजा पर, और तेरे घरों में झुंड के झुंड डांस भेजूँगा; और मिस्रियों के घर और उनके रहने की भूमि भी डांसों से भर जाएगी। [22]उस दिन मैं गोशेन देश को जिसमें मेरी प्रजा रहती है अलग करूँगा, और उस में डांसों के झुंड न होंगे; जिससे तू जान ले कि पृथ्वी के बीच मैं ही यहोवा हूँ। [23]और मैं अपनी प्रजा और तेरी प्रजा में अन्तर ठहराऊँगा। यह चिह्न

कल होगा'।" 24और यहोवा ने वैसा ही किया, और फ़िरौन के भवन और उसके कर्मचारियों के घरों में, और सारे मिस्र देश में डांसों के झुंड के झुंड भर गए, और डांसों के मारे वह देश नष्ट हुआ।

आयत 20. फ़िरौन के अपना मन बदलने और इस्राएल के लोगों को जाने से मना करने के बाद, परमेश्वर ने चौथी विपत्ति भेजी। उसने **मूसा** से कहा कि वह राजा **सवेरे** जैसे ही **जल** के निकट आए तो वह जाकर उसके सामने खड़ा हो जाए, जैसा उसने पहली विपत्ति के समय किया था (7:15)। मूसा को सातवीं विपत्ति से पहले भी फ़िरौन के पास "सवेरे-सवेरे" जाने के लिए कहा गया था (9:13)। परमेश्वर की ओर से मूसा का संदेश पहले के समान ही था: **"मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे।"**

आयत 21. इस संदेश के साथ चौथी विपत्ति की चेतावनी जुड़ी हुई थी। यदि फ़िरौन ने सुनने से इनकार किया, तो परमेश्वर उस पर, उसके कर्मचारियों, और मिस्री लोगों पर **झुंड के झुंड डांस** भेजेगा। यह विपत्ति क्या थी? असली शब्द में केवल "झुण्ड" עָרֹב *(हे'अरोब)* ही लिखा है। NASB के अतिरिक्त, अधिकतर अन्य सभी अनुवाद (KJV; NKJV; NRSV; NIV; ESV; REB; NAB) यही अनुमान लगाते हैं कि इसका अर्थ "डांसों [मक्खियों] का झुण्ड" है। NJB इस शब्द का अनुवाद "घुड़-मक्खियों" में करती है। NASB के कुछ संस्करणों में "कीटों का झुण्ड है।" कोल ने संकेत किया कि इस शब्द का अर्थ "मिश्रण" है और यह कीटों के एक मिश्रण का सन्दर्भ हो सकता है, "उड़ने वाले सभी प्रकार के प्राणियों का झुण्ड," परन्तु इसके अतिरिक्त यदि इसका तात्पर्य केवल एक प्रजाति से है, तो सेप्टुजिंट अनुवाद यह संकेत करते हैं कि आक्रमणकारी कीट "आधुनिक डांस या घुड़मक्खी" था, जिसका डंक पीड़ादायक था।[10] बाद में भजनकार ने लिखा कि परमेश्वर ने "उनके बीच में डांसों के झुण्ड भेजे जिन्होंने उन्हें काट खाया" (भजन 78:45)। प्राचीन मिस्रियों के लिए, काटने वाली मक्खी दृढ़ता और लगन का प्रतीक थी। एक सैन्य सम्मान जिसे "आर्डर ऑफ़ द गोल्डन फ्लाई" या "फ्लाई ऑफ़ वैलर" के नाम से जाना जाता है उसे उनके सैनिकों को युद्ध में "साहस दिखाने के लिए दिया जाता था।

आयतें 22, 23. विपत्ति **गोशेन देश** में परमेश्वर के लोगों को छोड़, मिस्र में सभी को और सभी स्थानों को प्रभावित करने वाली थी (उत्पत्ति 45:10; 47:27)। इस्राएलियों को इस विपत्ति से छूट देने के द्वारा, परमेश्वर ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसने अपने लोगों और मिस्रियों के मध्य में अंतर किया था। उसने स्पष्ट रूप से यही कार्य अन्य विपत्तियों में भी किया (9:4, 11, 26; 10:6, 23; 11:7)। मिस्रियों को दण्ड देते समय, परमेश्वर ने अपने लोगों की रक्षा की। ऐसा करने के द्वारा उसने अपनी उपस्थिति पर बल दिया: **"पृथ्वी के बीच मैं ही यहोवा हूँ।"**

मूसा विपत्ति के आरम्भ होने का समय निर्धारित करने पर था: **"कल"** इसके बाद, जब यह घटित हुई, तो फ़िरौन और उसके सेवक जान गए कि यहोवा ही इस विपत्ति को मिस्र पर लाया था। "डांसों के झुण्ड" के आगमन को निरे संयोग के रूप

में नहीं देखा जा सकता।

आयत 24. लेखक ने वे निर्देश दर्ज किए जो परमेश्वर ने मूसा को फ़िरौन को बताने के लिए कहे थे और इसके बाद कूच करते हुए विपत्ति के आगमन पर चला गया। उसने फ़िरौन के साथ मूसा की उस वास्तविक मुलाकात को छोड़ दिया, जब मूसा ने फ़िरौन के सामने परमेश्वर के वचन को प्रस्तुत किया और राजा ने सुनने से इनकार कर दिया था। लेखक ने यह अनुमान लगाया था कि पाठक समझ जाएगा कि क्या हुआ था।

इस विपत्ति ने पहले **फ़िरौन के भवन**, और इसके बाद **उसके सेवकों** ("कर्मचारी"; NIV) **के घरों** को प्रभावित किया। **डांसों के झुण्ड के मारे वह देश नष्ट हो गया** इस तथ्य ने कुछ टिप्पणीकारों को यह संकेत करने के लिए नेतृत्व किया है कि "डांसों के झुण्ड" कीटों के रूप में केवल खीझ दिलाने वाले ही नहीं थे बल्कि उन्होंने संक्रामक रोग, जैसे कि त्वचा का गिलटी रोग (एंथ्रेक्स) भी फैलाया।[11]

डांसों के झुण्ड का हटाया जाना (8:25-32)

[25]तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, "तुम जाकर अपने परमेश्वर के लिये इसी देश में बलिदान करो।" [26]मूसा ने कहा, "ऐसा करना उचित नहीं; क्योंकि हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मिस्रियों की घृणित वस्तु बलिदान करेंगे; और यदि हम मिस्रियों के देखते उनकी घृणित वस्तु बलिदान करें तो क्या वे हम पर पथराव न करेंगे? [27]हम जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाकर अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जैसा वह हम से कहेगा वैसा ही बलिदान करेंगे।" [28]फ़िरौन ने कहा, "मैं तुम को जंगल में जाने दूँगा कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिये जंगल में बलिदान करो; केवल बहुत दूर न जाना, और मेरे लिये विनती करो।" [29]तब मूसा ने कहा, "सुन, मैं तेरे पास से बाहर जाकर यहोवा से विनती करूँगा कि डांसों के झुंड तेरे, और तेरे कर्मचारियों, और प्रजा के पास से कल ही दूर हों; पर फ़िरौन आगे को कपट करके हमें यहोवा के लिये बलिदान करने को जाने देने के लिये मना न करे।" [30]अतः मूसा ने फ़िरौन के पास से बाहर जाकर यहोवा से विनती की। [31]और यहोवा ने मूसा के कहे के अनुसार डांसों के झुण्डों को फ़िरौन, और उसके कर्मचारियों, और उसकी प्रजा से दूर किया; यहाँ तक कि एक भी न रहा। [32]तब फ़िरौन ने इस बार भी अपने मन को कठोर किया, और उन लोगों को जाने न दिया।

आयत 25. डांसों के झुण्ड ने **फ़िरौन** को इतना परेशान कर दिया कि, वह पहली बार, मूसा की मांगो से सहमत हो गया। उसने **मूसा और हारून** को बुलवाया और उन्हें मिस्र के **इसी देश में** एक धार्मिक अवकाश लेने की अनुमति प्रदान कर दी। यह फ़िरौन के द्वारा प्रस्तुत किए गए समझौतों की श्रृंखला में से पहला था।

आयतें 26, 27. मूसा ने उत्तर दिया कि वे उस देश के भीतर **यहोवा को** वह **बलिदान** नहीं चढ़ा सकते थे जो **मिस्रियों की घृणित वस्तु** थीं (देखें उत्पत्ति 43:32;

46:34)। कोल ने टिप्पणी की, "मूसा ने इस आधार पर इनकार कर दिया कि मिस्र में बलिदान चढ़ाना एक मुस्लिम मस्जिद में सूअर को मारना, या एक हिन्दू मन्दिर में एक गाय का वध करने के समान होगा ... एकदम से दंगे भड़क उठेंगे।"[12] जेम्स के. होफ्फ़मीर ने सुझाव देते हुए कहा कि मिस्री इन तीन कारणों में से किसी से भी इस्राएलियों के बलिदान चढ़ाने का विरोध कर सकते थे: (1) वे पशुओं का बलिदान चढ़ाने का विरोध इसलिए कर सकते थे क्योंकि वे उन्हें पवित्र समझते थे; (2) वे भेड़ों के बलिदान का विरोध चरवाहों से उनकी घृणा के कारण कर सकते थे (उत्पत्ति 46:34); अथवा (3) वे साधारणतया इस्राएल की बलिदान रीतियों का विरोध कर सकते थे।[13] आपत्ति का कोई भी कारण रहा हो, मूसा के विरोध ने सूचित किया कि "याहवेह को एक अन्यजाति देश में शुद्ध बलिदान चढ़ाना अनुचित रहेगा।"[14] इसी कारण मूसा ने यहोवा को बलिदान चढ़ाने के लिए **जंगल में तीन दिन के मार्ग** की यात्रा पर जाने पर बल दिया।

आयतें 28, 29. फ़िरौन मूसा की शर्तों पर स्पष्ट रूप से सहमत हो गया और कहा कि इस्राएल केवल **बहुत दूर न जाना**। इसके बाद फ़िरौन ने **मूसा से** आग्रह किया कि वह **यहोवा** से **डांसों** को हटाने की विनती करे। मूसा यह कहकर उसकी बात से सहमत हो गया कि, वह अगले दिन इस बात को करेगा; परन्तु उसने तय किया कि **फ़िरौन** फिर से इस्राएलियों के साथ **कपट** न करे, जैसा उसने मेंढकों के विषय में किया था (8:8, 15)। दूसरे शब्दों में फ़िरौन को विपत्ति के हट जाने के बाद समझौते का अपना भाग पूरा करना था।

जब मूसा ने फ़िरौन से कहा कि इस्राएल जंगल में जाकर यहोवा के लिए **बलिदान** करना चाहता है तो क्या वह सत्य कह रहा था? इस प्रश्न का एक उत्तर यह है कि, वास्तव में, इस्राएल जंगल में तीन दिन की यात्रा तक गया (और उसके परे भी), और उन्होंने यहोवा को बलिदान भी चढ़ाया। कुछ लोग कहेंगे कि मूसा ने सत्य कहा, चाहे यह सम्पूर्ण सत्य नहीं था। इसका एक बेहतर उत्तर यह है कि यदि फ़िरौन ने उन्हें ऐसा सौभाग्य प्रदान किया होता तो, निर्गमन की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। हालाँकि, परमेश्वर जानता था कि राजा ऐसा नहीं करेगा। इसी कारण, विनती अन्य कदमों के साथ जुड़ा हुआ एक कदम मात्र ही था, जिसने परमेश्वर द्वारा मिस्र पर सम्पूर्ण विजय प्राप्त करने और इस्राएल के चमत्कारी छुटकारे की अगुवाई की।

आयतें 30-32. इस अवसर पर मूसा के फ़िरौन के सामने उपस्थित होने का परिणाम मेंढकों की विपत्ति के समान ही था (8:12-15)। **मूसा** ने प्रार्थना की, **यहोवा** ने सुनी, और विपत्ति **हटा** ली गई। फिर भी, **फ़िरौन ने अपने हृदय** को कठोर किया और इस्राएलियों को मिस्र छोड़कर जाने की अनुमति नहीं दी। राजा अभिमानी, क्रूर, स्वार्थी, और धोखेबाज था। वह एक वाचा तोड़ने वाला था। इस प्रकार के शासक के लिए, कोई भी दया नहीं करेगा - केवल घृणा ही करेगा। कहानी पाठक को फ़िरौन की असली हार की प्रतीक्षा करने के लिए विवश करती है।

अनुप्रयोग

"मेरे लोगों को जाने दे" (8:1)

परमेश्वर के लोग दासत्व में थे, और परमेश्वर ने अपने प्रतिनिधि मूसा के द्वारा मांग की, "मेरे लोगों को जाने दे" (8:1). आज, बहुत से लोग दासत्व में है। उदाहरण के लिए, वे निर्धनता, पियक्कड़पन, नशे की लत, या नस्लीय पक्षपात के प्रभावों के द्वारा, दासत्व में हो सकते हैं। इस प्रकार के लोगों को स्वतन्त्र किए जाने की आवश्यकता है! इसके साथ ही, परमेश्वर उन्हें स्वतंत्र होते देखना चाहता है।

हम इस संसार में परमेश्वर का कार्य करने के लिए उसके प्रतिनिधि हैं। यद्यपि कलीसिया का मुख्य कार्य लोगों को उस बंधन से स्वतन्त्र करना नहीं है जो उन्हें हानि पहुंचाता है, यह हमारे लक्ष्य (मिशन) का भाग होना चाहिए। हमें जैसे ही अवसर मिले तो लोगों की भौतिक, सामाजिक, और मानसिक तौर पर सहायता करना सभी लोगों की भलाई करना चाहिए (गला. 6:10)। इसमें अनाथों और विधवाओं को उनके कष्ट के समय में उनसे मिलने जाना (याकूब 1:27), लोगों के साथ वैसा व्यवहार करना जैसा हम उनसे अपने लिए चाहते हैं (मत्ती 7:12), और अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम रखना (मत्ती 22:39) सम्मिलित हैं।

हालाँकि, सबसे महत्वपूर्ण, यह पहचान करना है कि लोग पाप के बंधन में हैं और उन्हें स्वतन्त्र किए जाने की आवश्यकता है (रोमियों 3:23; 6:23)। कलीसिया का मुख्य कार्य वह सब करना है, जो हम मसीह के नाम उन लोगों को स्वतन्त्र करने के लिए कर सकते हैं जो पाप और शैतान के दासत्व में हैं। (यूहन्ना 8:34-36; इब्रा. 2:14, 15)। जिस प्रकार मूसा ने इस्राएल की स्वतन्त्रता के लिए फ़िरौन से संघर्ष किया, हम भी उसी के समान निरंतर एक युद्ध में हैं, और लोगों को शैतान की पकड़ से स्वतन्त्र करने का प्रयास करते हुए परमेश्वर के नाम से मांग करते हैं, "मेरे लोगों को जाने दे!"

अतुल्य परमेश्वर (8:10)

8:10 को मूल शब्द के रूप में उपयोग करते हुए कई पाठ विकसित किए जा सकते हैं।

(1) विपत्तियों ने निश्चित तौर पर यह दर्शाया कि मिस्र के देवता यहोवा परमेश्वर के तुल्य नहीं थे। भविष्यद्वक्ता भी अकसर परमेश्वर की लोगों की मूर्तियों से तुलना करते हुए यही शिक्षा दिया करते थे। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि "यहोवा के समान कोई और नहीं है।"

(2) आज हमारे कदमों का मार्गदर्शन करने, हमारे हृदयों को चंगा करने, हमारे जीवनों को आशीष देने, और हमारी पाप से रक्षा करने के लिए "कोई भी परमेश्वर के समान नहीं है।"

(3) एक और सम्भावना परमेश्वर की विशिष्टताओं पर ध्यान लगाना है। "कोई भी परमेश्वर के समान नहीं है," उदाहरण के लिए, पवित्रता, या क्रोध में।

परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देता है (8:12, 13)

"मूसा ने यहोवा को पुकारा," और "यहोवा ने मूसा के कहने के अनुसार ही किया" (8:12, 13)। जब धर्मी लोग परमेश्वर को पुकारते हैं, तो वह उनकी सुनता है (मत्ती 7:7, 8; याकूब 5:16)।

सबसे घातक रोग: हृदय को कठोर करना (8:15)

कुछ लोग "धमनियों का अकड़ना" नामक घातक स्थिति से पीड़ित होते है। इस परिस्थिति के लिए चिकित्सकीय शब्द "आर्टेरिओस्क्लेरोसिस [धमनी काठिन्य] है," और इसे एक पुरानी बीमारी के रूप में परिभाषित किया गया है "जिसमें धमनी दीवारों का मोटा होना और सख्त हो जाना रक्त परि संचरण को क्षीण कर देता है।"[15] जिस किसी व्यक्ति को यह बीमारी होती है वह एक आघात या दिल के दौरा पड़ने के खतरे में होता है।

इससे भी अधिक घातक बीमारी "हृदय का कठोर हो जाना" है। फ़िरौन की यही समस्या थी। निर्गमन 8:15 कहता है कि फ़िरौन ने "अपने हृदय को कठोर किया" और परमेश्वर के दूतों की नहीं सूनी। और मूसा के कहने के अनुसार ही, परमेश्वर ने मिस्र देश के ऊपर दूसरी विपत्ति, मेंढक भेजे। फ़िरौन पछताया और मूसा को यह कहते हुए मेंढकों को हटाने के लिए कहा, कि वह इस्राएल को जाने देगा (8:8)। मूसा सहमत हो गया, फ़िरौन ने समय तय किया, और मेंढक मर गए। हालाँकि, फ़िरौन अपने वचन का सम्मान नहीं किया; उसने लोगों को जाने से मना कर दिया। उसने "अपना हृदय कठोर कर लिया।"

हम जैसे ही फ़िरौन के हृदय को कठोर करने पर विचार करेंगे, हम जान जाएँगे कि किस प्रकार लोग आज भी उसी समस्या से पीड़ित हो सकते हैं।

फ़िरौन का हृदय किस प्रकार कठोर हो गया था? निर्गमन कई बार कहता है कि फ़िरौन ने अपना हृदय कठोर कर लिया (8:15), यद्यपि अन्य समयों पर यह कहता है कि परमेश्वर ने फ़िरौन के हृदय को कठोर कर दिया (4:21; 7:3; 9:12; 10:1)। इनमें से कौन सा सही है? क्या परमेश्वर ने फ़िरौन के हृदय को कठोर किया था, क्या इसका अर्थ यह था कि फ़िरौन की अपनी कोई इच्छा नहीं थी, और यह कि वह उन चुनावों को छोड़कर जो परमेश्वर ने उस पर थोपे थे कोई और चुनाव नहीं कर सकता था?

इस समस्या का सबसे अच्छा हल यह पहचान करना है कि निर्गमन पहले इस बात पर बल देता है कि फ़िरौन ने अपना हृदय कठोर किया और इसके बाद कहता है कि परमेश्वर ने फ़िरौन के हृदय को कठोर किया। 4:21 और 7:3 दोनों ही यह बताते हैं कि परमेश्वर भविष्य में क्या करेगा; क्या फ़िरौन के अपना हृदय कठोर करने के बाद शब्द कहता है कि परमेश्वर ने उसे कठोर किया था। दूसरे शब्दों में, फ़िरौन के अपना हृदय कठोर के बाद, परमेश्वर ने इसे और भी कठोर कर दिया। फ़िरौन ने उस मार्ग का चुनाव कर लिया था जो वह लेगा, परन्तु हो सकता है परमेश्वर ने उसे उस मार्ग पर धकेला था। हम इस बात से निश्चित हो सकते हैं कि फ़िरौन की अपनी एक स्वयं कि स्वतंत्र इच्छा थी, और परमेश्वर उससे उन चुनावों

का लेखा लेगा जो उसने किए थे।

जब इस बात पर अधिक सावधानीपूर्वक ध्यान देंगे कि जब फ़िरौन ने अपने हृदय को कठोर किया तो क्या हुआ था, तो हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि फ़िरौन के रोग में निम्नलिखित बाते सम्मिलित थीं: (1) हठ और ढीठपन, (2) परमेश्वर का वचन सुनने से इनकार करना, (3) उस वचन के सत्य के भरपूर प्रमाणों को स्वीकार करने की अनिच्छा, (4) अहंकार और अभिमान, और (5) लोगों के लिए दया की कमी।

हमारे हृदय किस प्रकार कठोर हो सकते हैं? "हृदय का कठोर हो जाना" आज भी एक समस्या है। नया नियम कहता है हममें से कुछ लोगों का विवेक मानो "जलते हुए लोहे से दागा गया है" (1 तीमु. 4:2; KJV)। इसके आगे, यह उन लोगों की बात करता है जिन्होंने अपने हृदय को कठोर कर लिया था (मरकुस 6:52; प्रेरितों 19:9) और हमें हृदय को कठोर करने के विरुद्ध चेतावनी देता है (इब्रा. 3:8, 13, 15; 14:7)।

दूसरा थिस्सलुनीकियों 2:10-12 कुछ ऐसे लोगों का वर्णन करता है जो "नाश" होंगे क्योंकि "परमेश्वर उन पर भरमाने वाला प्रभाव भेजेगा और वे उस बात का विश्वास करेंगे जो झूठ है।" वे लोग कौन हैं जिन्हें स्वयं परमेश्वर के द्वारा विनाश के मार्ग पर भेजा गया है? वे लोग ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने "सत्य के प्रेम का विश्वास नहीं किया ताकि बच जाएँ" और "सत्य का विश्वास नहीं किया, परन्तु कुकर्म से आनन्दित होते रहे।" दूसरे शब्दों में, यदि एक व्यक्ति सत्य से प्रेम या उस पर विश्वास नहीं करता परन्तु कुकर्म से आनन्दित होता है, तो हो सकता है कि परमेश्वर ने उस पर "भरमाने वाला प्रभाव" भेजा ताकि वह एक झूठ का विश्वास करें और अनंतकाल के लिए नाश हो जाए! यदि हम, फ़िरौन के समान, जानबूझकर गलत मार्ग का चुनाव करें, तो परमेश्वर हमें इसे लेने से नहीं रोकेगा। वास्तव में, वह हमें हमारे मार्ग पर शीघ्रता से पहुंचाएगा।

यदि हम दृढ़तापूर्वक परमेश्वर के वचन के सत्य का प्रमाण होने पर भी इसे सुनने से इनकार करें, तो हमारे हृदय कठोर हैं। यदि हम अभिमान से भरे हुए हैं, तो हम फ़िरौन के समान हैं।

उपसंहार। हमें यह अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि हृदय का कठोर हो जाना धमनियों के कठोर हो जाने से कहीं अधिक घातक है क्योंकि यह *अनंत* मृत्यु की ओर नेतृत्व कर सकता है! परमेश्वर का वचन एक कठोर हृदय को कोमल कर सकता है। क्रूस और उस मसीह की कथा जो हमारे लिए मरा उस दीवार को पिघला सकती है जिसे हमने अपने और परमेश्वर की दया के बीच में खड़ा कर लिया है। आओ हम उसके पास विश्वास और आज्ञाकारिता में आएं।

"यह परमेश्वर की अंगुली है" (8:19)

जब मिस्र के जादूगरों ने कहा, "यह परमेश्वर की अंगुली है" (8:19), तो वे परमेश्वर को कुटकियों की विपत्ति के स्रोत के रूप में स्वीकार कर रहे थे। कई बार हम प्राकृतिक आपदाओं को "परमेश्वर के कार्य" कहते हैं, परन्तु क्या अन्य बातें

जिनका हम अनुभव करते वे "परमेश्वर के कार्य" नहीं हैं? क्या हम अपने जीवनों में "परमेश्वर की अंगुली" को देखते हैं? हमें अवश्य ही यह स्वीकार करना चाहिए कि परमेश्वर हमारे संसार में कार्य कर रहा है। जैसे-जैसे वह हमारे जीवनों में कार्य करता है हमें अपने जीवनों में "परमेश्वर की अंगुली" को देखना सीखना चाहिए।

समाप्ति नोट्स

[1]*द इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया*, रेव. एड., एड. जेफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स. मिशिगन: विलियम बी. अड्र्समैन पब्लिशिंग को., 986), 3:622 में डेविड एम. हावर्ड। जूनियर, "ओवन।" [2]एड्रीयानुस वेन सेल्म्स, "ब्रेड," इन *द इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* रेव. एड., एड. जेफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स. मिशिगन: विलियम बी. अड्र्समैन पब्लिशिंग को., 1979), 1:541. [3]उपरोक्त। [4]जो शब्द परमेश्वर के निर्देशों के प्रति मूसा की आज्ञाकारिता के लिए उपयोग किए गए हैं लगभग उसी प्रकार के शब्द मूसा की प्रार्थना के उत्तर में उपयोग किए गए हैं (7:6, 10, 20)। [5]वाल्टर सी. कैसर. जूनियर, "एक्सोडस," इन *द एक्स्पोजिटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वॉल्यूम 2, *जेनेसिस-गिनती* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोन्डरवैन, 1990), 352. 15 आयत को इब्रानी आयत में आयत 11 के रूप में संख्या दी गई है। [6]ये जानकारियाँ संकेत करती है यह विवरण किसी प्रत्यक्षदर्शी के द्वारा लिखा गया है और इसी कारण इसके असली होनी का प्रमाण देता है। [7]निर्गमन 8:16-18 के अतिरिक्त, *केन* शब्द भजन संहिता 105:31 में भी प्रकट होता है और फिर इस तीसरी विपत्ति का सन्दर्भ देता है। आगे, कुछ विद्वान यह सोचते हैं कि यह शब्द यशायाह 51:6 में भी पाया जाता है; NIV उस अनुच्छेद में इस शब्द का अनुवाद "मक्खियों" में करती है। [8]फिलो *ऑन द लाइफ ऑफ़ मोज़ेस* 1.19. [9]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इंट्रोडक्शन एंड कमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: वर्सिटी प्रेस, 1973), 92-93. [10]कोल, 93-94. देखें फिलो ऑन *द लाइफ ऑफ़ मोज़ेस* 1.23.

[11]जॉन एच. वाल्टन एंड विक्टर एच. मैथ्यूज़, *जेनेसिस-ड्यूट्रोनॉमी,* द आई वी पी बाइबल बैकग्राउंड कमेंट्री (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रेस, 1997), 92. [12]कोल, 95. [13]जेम्स के. होफ्फ़मेरे, "एक्सोडस," *इनईवेंज्लिकल कमेंट्री ऑन द बाइबल*, एड. वाल्टर ए. एल्वेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर हाउस, 1989), 46. [14]उपरोक्त। [15]*द अमेरिकन हेरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्करण, एस.वी. "आर्टेरिओस्क्लेरोसिस।"